एक बाल या दांत से भी गिरफ्त में होंगे अपराधी

केजीएमयू में फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट की ओर से आयोजित वर्कशॉप में जुटे विशेषज्ञ

लखनऊ (ब्यूरो)। क्राइम का घटनास्थल सिर्फ एक जगह नहीं होता है, अलबत्ता वहां मौजूद एक बाल या दांत तक गुनहगार को पकड़वा सकता है। शव की शिनाख्त भी घटनास्थल पर मिली छोटी सी चीज से हो सकती है, बशर्ते इन्हें एकत्र करने और इन्वेस्टिगेशन में वैज्ञानिक तरीका अपनाया जाए। मंगलवार को केजीएमयू में आयोजित 'नेशनल फोरेंसिक ओडोंटोलॉजी कान्टीनुइंग डेंटल एजूकेशन प्रोग्राम एंड फोरेंसिक वर्कशॉप' में विशेषज्ञों ने केस स्टडी की मदद से फोरेंसिक पड़ताल की बारीकियों को उजागर किया। बीबीएयू में फोरेंसिक विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. नीतू मिश्रा ने बताया कि कैसे हर केस में बाल, दांत या दूसरे छोटे सुबूत महत्वपूर्ण हो गए।

टुकड़ों में शव मिला

केस 1 **घटनास्थल से मिली जानकारी :** भोपाल की इस घटना में एक तालाब में पैर मिले। सिर मिला लेकिन यह पूरी तरह गल चुका था। चार दिन बाद दूसरी जगह एक बैग में हाथ और शरीर के दूसरे हिस्से मिले।

फोरेंसिक टीम की जांच : दांत और सिर के स्कल की जांच में पाया गया कि मरने वाली लड़की थी, जो मेडिकल छात्रा थी। जिस बैग में अंग मिले, वह किसी फार्मा कंपनी का था। काटने के तरीके से भी किसी मेडिकल प्रैक्टिसनर की तरफ इशारा जा रहा था। सुबूतों की पड़ताल से पता चला कि मर्डर मेडिकल छात्रा के ही एक साथी ने किया था। शव ठिकाने लगाने के लिए उसके टुकड़े किए गए।

क्राइम कनेक्शन- दांत, स्क ल और बैग।

गोली लगने से युवक की मौत

केस 2 **घटनास्थल से मिली जानकारी :** एक युवक की गोली लगने से मौत हो गई। घटना को एक हादसा बताने की कोशिश की गई, जिसमें बाहर से गोली चलने पर युवक को गलती से गोली लग गई।

फोरेंसिक टीम की जांच : कमरे के हालात बता रहे थे कि वहां उसके अलावा भी लोग मौजूद थे। गोली लगने से त्वचा के टिश्यू जल गए थे, जो पास से गोली मारने पर ही संभव था। स्किन में भी मौजूद हेवी मेटल्स भी पास से गोली मारे जाने का सबूत दे रहे थे। घटनास्थल से मिले सेव पर दांतों से काटने और गिलास पर मौजूद होठों के निशान से अपराधियों को पकड़ा गया।

क्राइम कनेक्शन- गोली का निशान, सेब पर दांतों के निशान।

ताला काटकर चोरी

केस 3 **घटनास्थल से मिली जानकारी :** घर में ताला काटकर चोर अंदर घुस गए। चोरों ने घर में रखे लाखों रुपये का सामान गायब कर दिया। पुलिस को चोरी तो मिली, लेकिन शक भी हुआ कि घर में किसी फैमिली मेम्बर को इस चोरी की जानकारी क्यों नहीं हुई।

फोरेंसिक टीम की जांच : दरअसल जिस ताले को काटा गया था, उसका लिवर अपने लॉक से बाहर था। यह तभी संभव था जब ताला खुला रहा और उसे आरी से बाद में काटा गया हो। फोरेंसिक टीम की ओर से पड़ताल की गई तो पता चला कि मकान के ओनर से चोरी दिखाने के लिए यह सब खुद किया था।

क्राइम कनेक्शन- कटा हुआ ताला।

बेड पर मिली महिला की लाश

केस 4 **घटनास्थल से मिली जानकारी :** लखनऊ की इस घटना में 40 साल की एक महिला की लाश उसके ही बेड पर मिली। पुलिस ने पहली दफा घटना को आत्महत्या ही माना।

फोरेंसिक टीम की जांच : महिला के कमरे में बंधी रस्सी और उसके गले पर मिले फाइबर के टुकड़ों ने रस्सी के इस्तेमाल को तो साबित किया, लेकिन गले पर बने दो अलग-अलग चौड़ाई के निशान शक पैदा करते रहे। मौके पर कोई स्ट्रगल का निशान भी नहीं था, न ही बॉडी पर कोई इंजरी थी। पड़ताल में सामने आया कि महिला का मर्डर कर उसका शव वहां डाला गया था।

क्राइम कनेक्शन- गले पर रस्सी के निशान।

घटनास्थल की हर छोटी, बड़ी चीज सुबूत होती है। ऐसे में पुलिस और आमलोगों को भी क्राइम सीन से दूर रहना चाहिए। ऐसा न हो कि मौके पर मिला अपराधी का बाल आपके कपड़ों के साथ ही चला जाए। खाए हुए बिस्कुट का बाकी टुकड़ा से लेकर एक बाल, दांत का निशान अपराधी तक पहुंचा सकता है। पुलिस को भी फोटोग्राफी से लेकर सुबूत जुटाने तक में सावधानी बरतनी चाहिए।

-डॉ. नीतू मिश्रा, फोरेंसिक एक्सपर्ट, बीबीएयू

हर क्राइम सीन बोलता है, पुलिस सुने तो सही

अनिल कुमार सिंह

लखनऊ। हर क्राइम सीन चीख-चीखकर बताता है कि वहां क्या हुआ, कैसे हुआ। गुनहगार कौन है। पर क्या पुलिस इसे देख-सुन पाती है। बात जब यूपी पुलिस की हो तो फोरेंसिक एक्सपर्ट का मानना है कि यहां इसीलिए कम आरोपियों को सजा हो पाती है, क्योंकि जांच के दौरान वैज्ञानिक पहलुओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

> एक्सपर्ट से होती है चूक, तो बच जाते हैं गुनहगार

पुलिस ही क्यों पोस्टमार्टम तक में भी लापरवाहियां होती हैं। मोहनलालगंज में दरिंदगी के बाद महिला की हत्या के मामले में भी तो यही हुआ था। इस केस में पोस्टमार्टम की वीडियोग्राफी के दौरान कैमरे का फोकस पोस्टमार्टम करने वालों पर था, या फिर महिला के चेहरे पर। ऐसी वीडियोग्राफी से क्या किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है? केजीएमयू में मंगलवार को 'नेशनल फोरेंसिक ओडोंटोलॉजी कान्टीनुइंग डेंटल एजूकेशन प्रोग्राम एंड फोरेंसिक वर्कशॉप' के पहले दिन एक्सपर्ट ने इन्वेस्टीगेशन के तमाम अहम पहलुओं पर फोकस किया। चूंकि पूरी विधा साइंटिफिक है लिहाजा हम आपको बता रहे हैं सब कुछ आसान शब्दों में। साथ ही फोकस करते हैं कि कहां और कैसे होती है इन्वेस्टीगेशन, पोस्टमार्टम में चूक जिससे अपराधी कानून के फंदे से आसानी से बच निकलते हैं।

केजीएमयू के ब्राउन हॉल में फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते डीजीपी और कार्यक्रम में मौजूद लोग।

फोरेंसिक ऑडोंटोलॉजी यूनिट का उद्घाटन

लखनऊ (ब्यूरो)। केजीएमयू में मंगलवार को फोरेंसिक ऑडोंटोलॉजी यूनिट का उद्घाटन कुलपति प्रो. रविकांत ने ब्राउन हॉल में किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के किसी मेडिकल कॉलेज में ऐसी यूनिट नहीं है। यूनिट को रेफरल सेंटर के रूप में विकसित किए जाने की योजना है। इस मौके पर एडिशनल एडवोकेट जनरल गौरव भाटिया और पुलिस महानिदेशक एएल बनर्जी उपस्थित रहे।

दांत अहम साक्ष्य फिर भी किए जाते हैं नजरअंदाज

मृतक की पहचान में : एम्स के फोरेंसिक मेडिसिन के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. आदर्श कुमार कहते हैं कि दांत मौत के बाद भी बरसों तक सलामत रहते हैं। दो शख्स के दांत एक जैसे नहीं हो सकते। ऐसे में मरने वाला पुरुष था या स्त्री, उसकी उम्र क्या थी, उसकी रेस यानी वह जापानी था या अमेरिकन, ये सब पता लगाया जा सकता है। बॉडी पूरी तरह से जल चुकी हो या कंकाल ही बचा हो तो भी दांत से मृतक की पहचान हो सकती है। दांत के पल्प में डीएनए सुरक्षित रहता है, जिससे उसके परिवार के सैम्पल से मिलान कर पहचान की जा सकती है। निठारी कांड में 14 खोपड़ियों की पहचान दांतों से हुई थी।

मोडस ऑपरेंडी का पता लगाने में : मान लीजिए किसी को मुंह पर तकिया रखकर मार दिया गया। ऊपरी तौर पर सब कुछ सामान्य दिख रहा हो, फिर भी दांतों से पता लगाया जा सकता है कि उसे किस तरीके से मारा गया। दरअसल दबाव के कारण होठ और दांतों पर कुछ न कुछ असर जरूर आता है, भले ही वह हल्का क्यों न हो। नशे का ओवरडोज, जहर और एसिड पिला कर मारने के केसों में भी आसानी से दांत से पता लगाया जा सकता है। अफीम या इससे बनी दवाओं के ओवरडोज में दांत काले हो जाते हैं, सल्फ्यूरिक एसिड पिलाकर मारा गया तो दांत ज्यादा ही सफेद नजर आते हैं, वहीं नाइट्रिक एसिड में पीले हो जाते हैं। लेड, आर्सेनिक या अन्य जहर के मामलों में भी दांत पर ऐसे ही असर देखने को मिलते हैं।

गुनहगार तक पहुंचाने में : डॉ. आदर्श कुमार के मुताबिक सुनंदा पुष्कर मामले में बाइटिंग सामने आई। वे कहते हैं कि गुनहगार तक पहुंचने में बाइटिंग (दांत से काटने का निशान) बेहद अहम साक्ष्य होता है। दांतों के निशान के मिलान और घाव में मौजूद लार के स्वाब में मिले डीएनए से मुजरिम तक पहुंचा जा सकता है।

सुबूत मिट जाता है, पुलिस खंगालती रहती है

एक्सपर्ट के मुताबिक डेड बॉडी पर बाइटिंग पाए जाने पर भी डेंटिस्ट को सैम्पल लेने के लिए नहीं बुलाया जाता है। पोस्टमार्टम के दौरान भी डेंटिस्ट को नहीं बुलाया जाता। डॉ. आदर्श कहते हैं कि पोस्टमार्टम करने वाले ज्यादातर डॉक्टर एमबीबीएस होते हैं। पर जब केस में बाइटिंग है तो उसका सैम्पल लेने के लिए ओडोंलॉजी के एक्सपर्ट को बुलाया जाना चाहिए। क्योंकि वह बेहतर तरीके से सैम्पल ले सकता है। यह नहीं होने से न केवल गुनहगार तक पहुंचाने वाला, बल्कि उसको सजा दिला सकने वाला अहम साक्ष्य मिट जाता है। रेप के केसेज में भी जब पीड़ित का मेडिकल होता है तो बाइटिंग को नजरअंदाज किया जाता है जबकि इसके सैम्पल लिए जाएं तो गुनहगार का बच निकलना नामुमकिन हो जाए। यूपी के हालात पर वे कहते हैं यहां इसीलिए सबसे कम आरोपियों को सजा हो पाती है, क्योंकि इन वैज्ञानिक पहलुओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

क्राइम सीन : इन्वेस्टीगेशन में कहां-कहां होती है चूक

एंट्री : वारदात स्थल को सील नहीं किया जाना

आम आदमी के अलावा मौका-ए-वारदात पर तहकीकात में जुटी पुलिस भी धड़ाधड़ घुसती है। न तो शू कवर होता है और न हाथों में दस्ताने। सिफ्स इंडिया फोरेंसिक लैब नई दिल्ली के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रंजीत सिंह कहते हैं कि साक्ष्य जुटाते समय हाथों में ग्लव्स और शू कवर नहीं होने से फिंगर और फुट प्रिंट नष्ट होते हैं।

फोटोग्राफी : गैर प्रोफेशनल फोटोग्राफर से फोरेंसिक वर्क

मौका-ए-वारदात की फोटोग्राफी अपने आप में एक विधा है। डॉ. रंजीत के मुताबिक क्राइम सीन को दर्शाने के लिए यह उपयोगी हो सकते हैं। पर प्रोफेशनल नहीं होने से फोटोग्राफर अहम साक्ष्य को नजरअंदाज कर जाता है। फोटोग्राफी अगर सीन को समझाता है तो कुछ चीजें साबित करने के लिए दूसरी वैज्ञानिक प्रक्रियाएं अपनाई जानी चाहिए। फोटो की एक बड़ी खामी और होती है कि इससे रियल डिस्टेंस मसलन बॉडी और दीवार तो दिख रही है पर उनमें कितनी दूरी है इसका पता नहीं लगता। फोटो क्वालिटी खराब हो सकती है। कई बार तो हत्या में प्रयुक्त चाकू की फोटो ऐसी होती है कि केस डायरी में बताई गई लंबाई से कम दिखती है। फोटो में लंबाई प्रदर्शित हो जाए तो ऐसे सवाल न उठें। चाकू के बराबर में कुछ नहीं तो करेंसी रखकर फोटो खींच ली जाए। हर नोट की निश्चित लंबाई होती है ऐसी फोटो से केस डायरी मजबूत होगी।

वीडियोग्राफी : नहीं होता साक्ष्यों पर फोकस

वीडियोग्राफी क्राइम सीन को बेहतर तरीके से समझा सकता है। एम्स के फोरेंसिक मेडिसिन के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. आदर्श कुमार बताते हैं हमारे पास सैकड़ों वीडियो फुटेज ऐसे आते हैं जिसमें न तो घावों का सही से पता चलता है और न अन्य साक्ष्यों पर फोकस किया गया होता है। डॉ. रंजीत बताते हैं कि वीडियोग्राफी में 360 डिग्री पर ऑब्जेक्ट यानी घटना स्थल के कुछ शॉट्स होने चाहिए जिससे वहां क्या हुआ पता चल सके। घावों से लेकर घटनास्थल की हर चीज की मीडियम और लांग शॉट्स जरूर लें।

स्केचिंग : फौरी तरीके से स्केच तैयार कर दिया जाना

फोटो और वीडियो से दूरी के साथ कौन सी चीज किस दिशा में है यह पता लगाना मुश्किल होता है। लिहाजा पूरे क्राइम सीन को एक साथ दर्शाने वाली स्केच भी तैयार करानी चाहिए। मसलन शव, हथियार, बिखरा खून इन सबकी सही पोजिशन क्या थी, जो चीजें जिस दिशा में हों उन्हें कम्पास की मदद से ठीक उसी दिशा में और दूरी को माप कर सही-सही दर्शाया जाए।

पैकेजिंग: नमूनों को जुटाने के बाद सही पैकेजिंग नहीं

एक्सपर्ट के मुताबिक घटनास्थल से उठाए गए साक्ष्यों की पैकेजिंग सही से नहीं की गई तो लैब तक पहुंचते-पहुंचते उनके नष्ट होने का खतरा बना रहता है।

सीखना होगा क्राइम सीन को सुरक्षित करना

स्टेट फोरेंसिक लैब की डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अर्चना त्रिपाठी ने कहा कि क्राइम सीन से लार, खून या दूसरे सुबूत जुटाने के लिए सही तरीका अपनाया जाना चाहिए। कहीं से रूई लेकर उसे लकड़ी में लपेटकर लार लेना सबूत मिटा सकता है। खून का पैटर्न तक हत्या में उपयोग किए हथियार के बारे में बता सकता है। मोहनलालगंज दरिंदगी मामले में उनका कहना था कि पुलिस को क्राइम सीन सुरक्षित करने व सुबूत लेना सीखना होगा।

दरो-दीवार भी बताते हैं वारदात कैसे हुई

बीबीएयू में फोरेंसिक साइंस की लेक्चरर डॉ. नीतू मिश्रा कहती हैं कि बर्निंग वाले केसेज में साक्ष्य जुटाने में लापरवाहियां होती हैं। जबकि दीवारों पर चिपके धुएं के अंश से पता लगाया जा सकता है कि उसे केरोसिन डालकर मारा गया या पेट्रोल।

डीएनए डाटा बैंक की शुरू होगी कवायद

एडिशनल एडवोकेट जनरल गौरव भाटिया ने यूपी सरकार की मदद से केजीएमयू में एक डीएनए डाटा बैंक बनाए जाने की पहल शुरू करने के लिए कहा। उनका कहना था कि अगर हम हर अपराधी की डीएनए आइडेंटिटी लेकर स्टोर कर सकें तो यह सफलता होगी।

बुखार के मरीज बढ़े, वार्ड में भर्ती बंद

अस्पतालों की इमरजेंसी फुल, ओपीडी में भीड़

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। सरकारी अस्पताल संक्रामक रोग से पीड़ित मरीजों से फुल हो गए हैं। लोहिया, सिविल और बलरामपुर अस्पताल की इमरजेंसी पूरी तरह फुल रही। ओपीडी में भी मरीजों की भारी भीड़ रही। बेड न खाली होने से गंभीर रोगियों को भर्ती करने में भी मुश्किलें आ रही हैं। अस्पतालों में गंभीर रोगियों को भर्ती करने के लिए पहले से भर्ती मरीजों को मजबूरी में समय से पहले ओपीडी में रेगुलर दिखाने की बात कहकर डिस्चार्ज किया जा रहा है।

मंगलवार को लोहिया अस्पताल से डिस्चार्ज हुए भगवान लाल (40) ने बताया कि उनको पेट संबंधी समस्या के बाद भर्ती कराया गया था। डॉक्टर ने कुछ जरूरी दवाएं लिखकर डिस्चार्ज कर दिया। अस्पताल के सीएमएस डॉ. आरसी अग्रवाल ने बताया कि गंभीर रोगियों की भर्ती की जा रही है। यही हाल सिविल और बलरामपुर अस्पताल का है जहां इमरजेंसी यूनिट कई दिनों से फुल चल रही है। सिविल अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आशुतोष दुबे ने बताया कि इमरजेंसी को खाली रखने के लिए 20 से अधिक रोगियों को वार्ड में शिफ्ट किया जा रहा है और उतने ही मरीज डिस्चार्ज किए जा रहे हैं। बलरामपुर अस्पताल के निदेशक डॉ. यूएन राय ने बताया कि इमरजेंसी में सौ से अधिक मरीज भर्ती किए जा रहे हैं।

लोहिया अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड मरीजों से भर गए हैं।

साफ-सफाई बचाएगी जान

सिविल अस्पताल के ईएमओ डॉ. अनिल कुमार बताते हैं कि बारिश के बाद इंफ्यूएंजा नामक वायरस शरीर की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाता है। इससे लोग बुखार और दूसरे संक्रामक रोगों की चपेट में आ जाते हैं। इससे बचने के लिए साफ-सफाई जरूरी है। बांसी और बाहर का खाना खाने से बचना चाहिए।

एनआईसीयू में भी जगह नहीं नवजातों का इलाज मुश्किल

लखनऊ (ब्यूरो)। सरकारी अस्पतालों के एनआईसीयू और एसएनसीयू यूनिट पूरी तरह फुल हो चुकी है। अस्पताल पहुंचने वाले नवजात बच्चों की भर्ती मुश्किल हो रही है। गंभीर बच्चों को वार्ड में भर्ती कर बारी-बारी से शिफ्टिंग में उनका इलाज किया जा रहा है। अस्पतालों में बेड की कमी के चलते उनको केजीएमयू रेफर किया जा रहा है।

चिनहट, मटियारी के रहने वाले बृजेश कुमार की पत्नी शोभा (28) का कुछ दिन पहले निजी नर्सिंग होम में प्रसव हुआ था। दो दिन बाद नवजात को सांस लेने में दिक्कत हुई तो मंगलवार को डॉक्टरों ने लोहिया अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। वहां पहुंचने पर आठ बेड की नियोनेटल इंटेसिव केयर यूनिट पूरी तरह फुल मिली। डॉक्टरों ने उन्हें केजीएमयू जाने की सलाह दी। बृजेश ने केजीएमयू जाने से पहले झलकारीबाई और डफरिन अस्पताल के एनआईसीयू और एसएनसीयू यूनिट में बेड के स्टेटस की जानकारी ली तो वहां भी बेड फुल होने की जानकारी दी गई।

> लोहिया, डफरिन और झलकारीबाई अस्पताल फुल
>
> बेड की कमी के चलते बच्चों को केजीएमयू किया जा रहा रेफर

क्या कहते हैं अधिकारी

डफरिन अस्पताल के एसएनसीयू के इंचार्ज डॉ. सलमान खान बताते हैं कि अस्पताल में जन्म लेने वाले बच्चों की भर्ती प्रमुखता से होती है। इसके बाद सीएचसी और बीएमसी में जन्म लेने वाले नवजात को भर्ती किया जाता है। प्राइवेट अस्पताल में जन्म लेने वाले बच्चों को क्रिटिकल कंडिशन में भर्ती किया जाता है। लोहिया अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एमएल भार्गव बताते हैं कि आठ बेड की यूनिट अधिकतर समय फुल रहती है। इमरजेंसी ट्रीटमेंट के लिए बच्चों को शिफ्ट करना पड़ता है। बेड के संकट के चलते केजीएमयू भेजना मजबूरी है।

इसके बाद वो नवजात को लेकर केजीएमयू पहुंचे जहां उसे दोपहर करीब दो बजे भर्ती किया गया।

न्यूज डायरी

आठ तक चलेगा नेत्रदान अभियान

लखनऊ। इंदिरा गांधी आई हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की ओर से शुरू किया गया नेत्रदान अभियान आठ सितंबर तक चलेगा। कॉर्निया एंड रिफ्रैक्शन सर्जरी की विभागाध्यक्ष डॉ. अंजुम मजहारी ने बताया कि अब तक कुल 31 लोगों ने नेत्रदान करने की इच्छा जताई है।

किशोर के तराने गाते सुनाई देंगे नवेद

लखनऊ। उप्र संगीत नाटक अकादमी अध्यक्ष नवेद सिद्दीकी का खुद का गाया किशोर कुमार कलेक्शन जल्द ही सामने होगा। अकादमी के अध्यक्ष नवेद सिद्दीकी ने मंगलवार को बताया कि इसमें उन्होंने किशोर कुमार के गाए 10 गानों को आवाज दी है।

हज हाउस में बदइंतजामी बरकरार

गलत सूचना से दो हज यात्रियों की फ्लाइट छूटी

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। हज हाउस पहुंच रहे हज यात्रियों को राज्य हज कमेटी की बदइंतजामी का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। मंगलवार को दो हज यात्रियों की फ्लाइट इसलिए छूट गई, क्योंकि वे राज्य हज कमेटी के बताए फ्लाइट के समय हज हाउस पहुंचे। उन्हें अगली उड़ान के लिए फ्लाइट यात्रा खर्च 17050 रुपये फिर से जमा करके अगली तिथि सुनिश्चित कराने की चेतावनी दी गई।

सुल्तानपुर के बुजुर्ग रमजान अली को मंगलवार को फ्लाइट संख्या एसवी 5215 से मदीना रवाना होना था लेकिन उन्हें रात व सुबह फोन पर जानकारी मिली कि मंगलवार को दूसरी उड़ान से मदीना रवाना होना है। जिससे रमजान अली अपने परिवारीजनों के साथ दोपहर में पासपोर्ट व टिकट लेने हज हाउस पहुंचे लेकिन यहां उन्हें बताया गया कि उनकी उड़ान संख्या 5215 जा चुकी है।

कानपुर रोड स्थित हज हाउस के बाहर हज यात्रियों का जारी रहा आना जाना।

₹17050 जमा करने पर मिलेगी अगली उड़ान तिथि

> हज यात्रियों को बराबर सूचनाएं दी जा रही हैं, एसएमएस के जरिये फ्लाइट की तिथि और रिपोर्टिंग की जानकारी पहुंच रही है। अब इसके बावजूद किसी के पास सूचना नहीं पहुंच रही तो इसमें हज यात्री की गलती है।
>
> -डॉ. सुल्तान अहमद, सचिव राज्य हज कमेटी

पहली फ्लाइट से 350 की जगह 348 ही हुए रवाना

लखनऊ। दो हज यात्री मदीना के लिए पहली उड़ान से रवाना नहीं हुए लेकिन राज्य हज कमेटी ने अपने जारी बुलेटिन में सभी हज यात्रियों को रवाना कर दिया। राज्य हज कमेटी से मंगलवार को 348 हज यात्री मदीना रवाना हुए लेकिन सचिव डॉ. सुल्तान अहमद की बुलेटिन में 350 हज यात्रियों की रवानगी की सूचना जारी की गई। उनके मुताबिक राजधानी से मंगलवार को सात सौ हज यात्री मदीना रवाना हो गए।

रमजान अली के सहयोगी मुजफ्फर हुसैन ने बताया कि सुबह 11 बजे राज्य हज कमेटी के कार्यालय पर फोन नंबर 052265911 पर फोन किया लेकिन उन्हें शाम की उड़ान के बारे में ही बताया गया। इस पर हज कमेटी ऑफ इंडिया के कर्मचारियों ने कहा कि हज पर जाना है तो 17050 रुपये तब अगली फ्लाइट तिथि तय की जाएगी। इसी तरह मंगलवार की पहली उड़ान से जाने वाले बस्ती के कवर नंबर यूपीएफ 23-905-2 के मुराद अली और फातिमा को भी 12.20 की उड़ान से मदीना रवाना होना था, लेकिन उन्हें भी सही जानकारी नहीं मिलने से वे रिपोर्टिंग नहीं कर सके और उड़ान छूट गई। अब अगली तिथि के लिए यह भी हज हाउस में ही डटे हैं। , लेकिन देर रात तक उनकी भी उड़ान की व्यवस्था नहीं की जा सकी।